अत्यंत गोपनीय केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

अंक-योजना

विषय- हिंदी

कक्षा - दसवीं

सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी त्रुटि भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय कृपया दिए गए उतरों को समझे, भले ही उत्तर मार्किंग स्कीम में न हो, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर अंक दिए जाने चाहिए।
3. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मान बिंदु होते हैं। ये केवल दिशा-निर्देशों की प्रकृति के हैं और पूर्ण नहीं हैं। यदि परीक्षार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो उसके अनुसार नियत अंक दिए जाने चाहिए।
4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का चिह्न (√) लगाएँ और गलत उतर पर गलत का (×) मूल्यांकनकर्ता द्वारा ये चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है, परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए।
5. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायी ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायाँ और के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उन्हें ही स्वीकार करे, उन्हीं पर अंक है।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर हर बार अंक न काटे जाएँ।
9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में पूर्ण अंक पैमाना 0-80 (उदाहरण 0-80 अंक जैसा कि प्रश्न में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
10. ये सुनिश्चित करें कि उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण के अंकों के साथ मिलान हो।
11. आवरण पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का योग जाँच लें ।

Download from www.MsEducationTv.com

12.उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।

13.उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन समिति के सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है। परीक्षक सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है। आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक अपने विवेकानुसार उस प्रश्न का मूल्यांकन करे।

अंक-योजना
विषय - हिंदी
कक्षा - दसवीं
कोड - C

कक्षा : दसवीं अधिकतम अंक 80

सामान्य निर्देश :-

1. अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
2. वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है बल्कि ये सुझावात्मक एवम् सांकेतिक हैं।
3. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न , किन्तु उपयुक्त उत्तर है, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
4. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

Download from www.MsEducationTv.com

खंड -क

प्रश्न- संख्या	उत्तर	अंक विभाजन

प्रश्न-1 व्याकरण एवम् रचना पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

क) जिस समास में पूर्व पद संख्यवाचक विशेषण होता है,उसे द्विगु समास किसे कहते हैं।
जैसे -दोपहर - दो पहरों का समूह । — 2

ख) (i) सोम + ईश — 1
(ii) सूर्य + उदय — 1

ग) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में क्रिया को मूल रूप से चलाने वाला कर्ता है,कर्म है या भाव है,उसे वाच्य कहते हैं।
जैसे राम ने ख़ाना खाया। — 2

घ) (i) बिजली - विद्युत, दामिनी — 1
(ii) राक्षस - निशाचार, दैत्य — 1

ङ) (i) अपना ही स्वार्थ सिद्ध करना - आजकल के नेता अपना ही उल्लू सीधा करने में लगे हैं। — 1
(ii) मूर्ख होना - मैंने राम को बहुत समझाया परंतु वह तो अक़्ल का दुश्मन है। — 1

च) जहाँ उपमेय में उपमान का अभेद आरोप किया जाता है ,वहाँ रूपक अलंकार होता है।जैसे - मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहौ। — 2

छ) दोहा एक अर्द्धसममात्रिक छंद है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 13-13 तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 11 -11 मात्राएं होती हैं। द्वितीय एवं चतुर्थ चरण के अंत में गुरु लघु वर्ण आते हैं.
जैसे -तुलसी या संसार में मिलयो, सबसों धाये ।
ना जाने किस रुप में, नारायण मिल जाये ।। — 2

प्रश्न- 2 किसी एक विषय पर निबंध — **5 अंक**

क) भूमिका — 1
ख) विस्तार + निर्धारित शब्द सीमा — 3
ग) उपसंहार — 1

प्रश्न- 3 पत्र लेखन — **5 अंक**

क) आरंभ और अंत की औपचारिकताएं — 1
ख) विषय वस्तु — 3
ग) भाषा — 1

खंड - ख (क्षितिज काव्य खंड)

प्रश्न- 4 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर — **6 अंक**

(i) घ) गुड़ — 1
(ii) ख) बच्चा — 1
(iii) क) मन के लिए — 1
(iv) ख) समस्त जन — 1
(v) ग) शेफालिका — 1
(vi) ख) सीमाहीन — 1

प्रश्न- 5 काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर — **(5)**

(i) कवि - जयशंकर प्रसाद , कविता - आत्मकथ्य — 1
(ii) काव्यांश में मधुप मन को कहा गया है। — 1
(iii) पत्तियों का मुरझाना जीवन में आने वाले दुख,तकलीफ़ के लिए है । — 1

Download from www.MsEducationTv.com

(iv) 'अनंत-नीलिमा' जीवन का अंतहीन विस्तार है और 'असंख्य जीवन इतिहास' मानव मन में उत्पन विचार। 1

(v) 'गागर रीती' से अभिप्राय है कि कवि के जीवन में सुख और सुविधाओं का अभाव है। 1

प्रश्न- 6 काव्य-सौंदर्य- **(3)**

(i) भाव सौंदर्य 1½

(ii) शिल्प सौंदर्य 1½

भाव - सौंदर्य :- प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने पीड़ित और प्यासे लोगों के ह्रदय की पीड़ा को दूर करने के लिए बादलों का आह्वान किया है।बादलों की गर्जन शक्ति के रूप में है और ये बादल नया जीवन देने वाले हैं।

शिल्प सौंदर्य :- भाषा - खड़ी बोली

छंदमुक्त कविता

शैली - संबोधन

अलंकार - ललित -ललित - पुनरुक्ति-प्रकाश ,

बाल कल्पना के से पाले - उपमा अलंकार

प्रश्न- 7 प्रश्नों के उत्तर **3+3= 6 अंक**

क) गोपियाँ उद्धव को अत्यंत बड़भागी या भाग्यवान कहती हैं । यह बात वे सामान्य ढंग से ना कह कर व्यंग्य रूप में कहती हैं । उनके कहने का तात्पर्य है- उद्धव श्री कृष्ण के पास रहते हुए भी उनके प्रेम के बंधन में नहीं बंधे। यदि वे प्रेम में लीन होते तो उनकी दशा भी गोपियों के समान हो जाती ।

ख) 'संगतकार' कविता श्री मंगलेश डबराल द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण कविता है। इस कविता का उद्देश्य मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्त्व पर प्रकाश डालना है। इस कविता के माध्यम से कवि ने यह संवेदनशीलता - विकसित करने का प्रयास किया है कि नायक की सफलता में सहायक प्रत्येक व्यक्ति का अपना विशेष महत्त्व है। उनके बिना नायक सफलता के चरम बिंदु पर नहीं पहुँच सकता। संगतकारों का सामने न आना उनकी कमज़ोरी या असफलता नहीं बल्कि उनकी मानवता है।

खंड - ग (क्षितिज गद्य खंड)

प्रश्न- 8 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **(6)**

(i) ख) कहानी 1

(ii) क) कबीरदास को 1

(iii) ख) भद्रपुरुष 1

(iv) ख) डॉ॰ अंबालाल 1

(v) ग) नागस्वरम 1

(vi) घ) मानव सुख 1

प्रश्न- 9 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर **(5)**

(i) पाठ - संस्कृति , लेखक - भदन्त आनन्द कौशल्यायन 1

(ii) सभ्यता संस्कृति का परिणाम है। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे गमना-गमन के साधन , हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता हैं। 1

(iii) लेखक के अनुसार, नई चीजों का आविष्कार करने वाली योग्यता,ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा तथा सर्वस्व त्याग कराने वाली भावना ही संस्कृति है। 1

(iv) संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति हो जाती है। 1

(v) जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम असभ्यता

की श्रेणी में रख सकते हैं । मानव कल्याण के विरुद्ध किए गए सभी कार्य असभ्यता के

Download from www.MsEducationTv.com

अन्तर्गत आते हैं। 1

प्रश्न-10 लेखक/लेखिका परिचय **(5)**

क) जीवन परिचय 1

ख) प्रमुख रचनाएँ 1

ग) साहित्यिक विशेषताएँ 1½

घ) भाषा -शैली 1½

प्रश्न- 10 प्रश्नों के उत्तर **2+2 =4 अंक**

(क) (i)कबीरपंथी - वे कबीर को 'साहब' मानते थे व उन्हीं के दिए हुए आदेशों का पालन करते थे। वे ' साहब ' को इतना मानते थे कि उनकी खेती में जो कुछ भी पैदा होता तो पहले उसे चार कोस चलकर ' साहब ' के दरबार में ले जाते थे व प्रसाद स्वरुप चढ़ाते व फिर जो भी बचता उसे भेंट स्वरुप स्वीकार कर गुजारा चलाते थे।

(ii) वे बहुत खुले दिल के थे व बेकार में किसी से लड़ाई नहीं करते थे। वह किसी और की चीज को नहीं बिना पूछे छूते थे व न ही उनका प्रयोग करते थे।

(ख) शहनाई मंगलध्वनि का वाद्य है। बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है। वे सुरों के सच्चे साधक थे। अस्सी बरस की सुर साधना के बाद भी उनको ऐसा लगता था कि अभी उनके शहनाई वादन में कुछ कमी रह गई है। इसीलिए वे अल्लाह से सच्चा सुर माँगते रहे। उनके सुरों में वो जादू था कि सुनने वाले मदहोश हो जाते थे। बालाजी मंदिर हो या संकटमोचन मंदिर या विश्वनाथ का मंदिर - सब जगह उनकी शहनाई का स्वर सुनाई पड़ता है। इसलिए उन्हें शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

खंड - घ (कृतिका भाग -2)

प्रश्न- 12 कृतिका भाग -2 के आधार पर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर **3+3 = 6 अंक**

(क) 'माता का अँचल' कहानी में माँ के आँचल की सार्थकता को समझाने का प्रयास किया गया है। बालक भोलानाथ का जुड़ाव पिता के साथ दिखाया गया है, परंतु जब वह साँप को देखकर डर जाता है तब वह पिता की अपेक्षा माता की गोद में छिपकर ही शांति व सुरक्षा का अनुभव करता है। भोलानाथ का अपने पिता से अपार स्नेह था, पर विपत्ति के समय जो शांति और प्रेम की छाया उसे अपनी माँ की गोद में जाकर मिली वह शायद उसे पिता से प्राप्त नहीं हो पाती। लेखक ने इसीलिए पिता-पुत्र के प्रेम को दर्शाते हुए भी इस कहानी का शीर्षक 'माता का अँचल' रखा है, जो कि पूर्णतः उपयुक्त है।

(ख) जितेन नार्गे ने बताया कि एक पत्थर पर गुरुनानक देव जी के पैरों के निशान हैं। ऐसा माना जाता है कि यहाँ गुरुनानक देव जी की थाली से थोड़े से चावल छिटक कर बाहर गिर गए थे। जिस जगह चावल गिरे थे, वहाँ चावल की खेती होती है।

(ग) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' अज्ञेय जी का एक प्रसिद्ध निबंध है। लेखक ने अपने विचार रखते हुए निबंध में बताया है कि लेखक की भीतरी विवशता ही उसे लिखने के लिए मजबूर करती है और लिखकर ही लेखक उससे मुक्त हो पाता है। प्रत्यक्ष अनुभव जब अनुभूति का रूप धारण करता है, तभी रचना पैदा होती है। अनुभव के बिना अनुभूति नहीं होती, परंतु यह आवश्यक नहीं है कि हर अनुभव अनुभूति बने । लेखक ने अपने द्वारा

Download from www.MsEducationTv.com

रचित 'हिरोशिमा' कविता की रचना का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि अनुभव जब भाव - जगत् और संवेदना का हिस्सा बनता है, तभी वह कलात्मक अनुभूति में रूपांतरित होता है।

खंड - ङ **नैतिक शिक्षा**

प्रश्न (13) (क) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर (4)

1. (I) वाणी रूपी आभूषण 1

2. (iii) भारत कोकिला 1

3. (iv) उपरोक्त सभी 1

4. (ii) 2015 में 1

(ख) यहाँ कंचन का अर्थ है - सोना अर्थात् धन -दौलत। अगर व्यक्ति के पास ज़रूरत से ज़्यादा धन संचय हो जाता है तो सभी उसके मित्र बन जाते हैं और मुसीबत या संकट आने पर जब धन समाप्त हो जाता है तो उससे मुँह मोड़ लेते हैं। धनवान व्यक्ति को ही गुणवान/ बुद्धिमान समझा जाता है।

(ग) स्त्री शिक्षा के विषय में मदनमोहन मालवीय जी के उच्च विचार थे। (3)
वे कहा करते थे, "स्त्री शिक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि स्त्रियाँ भावी सन्तान की माताएँ हैं। उनकी शिक्षा ऐसी हो, जो उनके व्यक्तित्व में प्राचीन तथा नवीन सभ्यता के गुणों का समन्वय कर सके।" इस प्रकार वे चाहते थे कि स्त्रियाँ ऐसी शिक्षा ग्रहण करें जिससे वे अपनी भावी संतान में प्राचीनता के साथ -साथ नवीन गुणों का भी समावेश करे।

------------------------XXXXXXXXXX ---------------------------

Download from www.MsEducationTv.com